डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस–विज्ञप्ति

वाचिक एवं जनजातीय साहित्य पर संगोष्ठी एवं आदिवासी कवि सम्मिलन का समापन

नई दिल्ली, 14 फरवरी 2018। साहित्योत्सव के दौरान वाचिक एवं जनजातीय साहित्य पर संगोष्ठी का अंतिम दिन साहित्य अकादेमी के भाषा सम्मान पुरस्कार विजेता लोकसाहित्य मर्मज्ञ श्री वसंत निरगुणे की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस तृतीय सत्र में डॉ. आशुतोष भारद्वाज, डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र तथा डॉ. ओमप्रकाश भारती ने अपने विचार प्रस्तुत किए। डॉ. भारद्वाज ने कहा कि जनजाति शब्द अत्यधिक राजनीतिक और सांस्कृतिक अर्थ लिए हुए है तथा यह अपने में अनेक वैविध्यपूर्ण एवं विजातीय समुदायों को अखंडित रखे हुए है, लेकिन साथ ही कहीं न कहीं इन समुदायों को गैर–आधुनिक एवं पिछड़ा जैसे अनुचित विशेषणों के माध्यम से छोटा भी बनाता है। डॉ. भारती ने लेप्चा जनजाति की कथाओं और मान्यताओं को संदर्भित करते बताया कि किस प्रकार आदिवासी समाज की मान्यताएँ अन्य समाजों की मान्यताओं से कहीं अधिक श्रेष्ठ और मानवीय हैं। उन्होंने आगे कहा कि यहदि हम सांस्कृतिक विविधता को अस्वीकृत करते रहेंगे तो भारतीय संस्कृति को खत्म होने से नहीं बचा सकते। डॉ. मिश्र ने कहा कि आदिवासी संस्कृति जहाँ पृथ्वी को सदैव माता मानती और उसका आदर करती है, वहीं पाश्चात्य संस्कृति उस पर विजय पाने का प्रयत्न करती रही है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री वसंत निरगुणे जी ने कहा कि आधुनिक विद्वानों द्वारा वाचिक एवं जनजातीय साहित्य पर काम कम हो रहा है, इस पर विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत है।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता प्रो. पुरुषोत्तम बिलिमले ने की, जिसके अंतर्गत प्रो. निर्मल सेल्वमणि, डॉ. एस. नागमल्लेश्वर राव एवं डॉ. शाइमा पी. ने क्रमशः तमिल, तेलुगु एवं मलयाळम् भाषा के संदर्भ में अपने–अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. सेल्वमणि ने वाचिक तमिळ संगम साहित्य के विविध पक्षों पर अपने विचार रखे। डॉ. राव ने तेलुगु साहित्य में वाचिक साहित्य का वर्तमान परिदृश्य विषयक अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. शाइमा ने वाचिक साहित्य एवं ऐतिहासिकता पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा मलयाळम् के वाचिक साहित्य एवं मलयाळम् में आदिवासी विषयक साहित्य की पड़ताल करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। प्रो. बिलिमले ने कन्नड वाचिक साहित्य को संदर्भित करते हुए अपने विचार रखे तथा इस बात के लिए आह्वान किया तमाम आदिवासी लेखक इस बात के लिए प्रयत्न करें कि भारत सरकार राष्ट्रीय लोकसाहित्य अकादमी की स्थापना करे।

आदिवासी कवि सम्मिलन के आज के सत्र में एम. पी. रेखा (कोडवा), विकास राय देववर्मा (कोकबॅरक), महावीर ओरांव (कुड़ुख), दीनबंधु कँहर (कुई), कोंचोक रिग्जिम (लद्दाखी), थु. थुंबु मरम (मरम), दीपक कुमार दोले (मिसिंग), पुनी लोसी (माओ), आश्रिता टूटी (मुंडारी), जमुना बीनी तादर (त्रिशी), एन. वुमसुआन (पाइते), चारुमोहन राभा (राभा) तथा राजेश राठवा (राठवी) ने क्रमशः कोष्ठांकित भाषाओं में अपनी कविताओं का पाठ किया। अनेक कवियों ने मनमोहक गीतमय प्रस्तुतियाँ दीं। सभी कवियों ने अपनी कविताओं के हिंदी–अंग्रेजी भावानुवाद भी प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

14/2/2018

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in